www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य्य मार्तण्ड

❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर

वर्ष: 87 अंक 23
भादौ शुक्ला अमावस्या
विक्रम संवत 2070
कलि संवत 5115
5 सितम्बर से 21 सितम्बर 2013 तक
दयानन्दाब्द 189
सृष्टि सम्वत् 1, 96, 08, 53, 114

मुख्य सम्पादक :
पं. अमर सिंह आर्य, 9214586018
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

संपादक मंडल:
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजय सिंह भाटी, जोधपुर
डॉ. सुधीर आर्य, बगरू
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुन देव चड्ढा, कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा, जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य, अलवर

प्रकाशक:
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
राजापार्क, जयपुर
दूरभाष- 0141-2621879
प्रकाशन: दिनांक 1 व 15
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता
अमर मुनि वानप्रस्थी
सम्पादक आर्य मार्तण्ड, सेढ़ का टीला
केडलगंज, अलवर (राज.)
मोबाईल- 9214586018

मुद्रक:
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स,जयपुर
ग्राफिक्स :
भार्गव प्रिन्टर्स, दासकूटा, अलवर
Email: bhargavaprinters@gmail.com
Email:aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

यह अंक वैदिक आश्रम पिपराली (सीकर) के सौजन्य से

आर्यो के तीर्थ दयानन्द मठ, दीनानगर जिला गुरदासपुर (पंजाब) द्वारा

हीरक जयन्ती समारोह

दिनांक 18, 19 एवं 20 अक्टूबर 2013

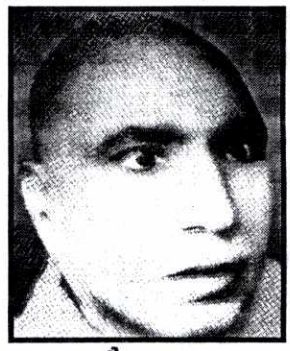

लौह पुरुष
स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी महाराजा

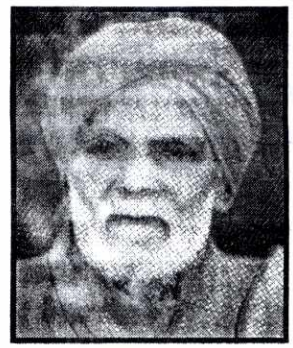

पूज्य गुरुवर
स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

दयानन्द मठ की स्थापना

* 1937 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को लौह पुरुष फील्ड मार्शल स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी महाराज ने दयानन्द मठ की स्थापना की थी। इस संस्था ने स्वामी जी की भावनाओं को आगे रखकर महाराज के पश्चात् भी आर्य समाज के यश की रक्षा की है। आर्य समाज की कीर्ति में अक्षय वृद्धि की है, आज भी आर्य समाज के सिद्धान्त को एवं वैदिक संस्कृति के प्रचार प्रसार में अहर्निश मठ परिवार रात दिन यश रूपी पताका फहराने में तन मन धन से सेवारत है।

* मठ की स्थापना का उद्देश्य:- स्वामी जी का यह मत था कि सन्यासी वानप्रस्थी एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारी ही धर्म प्रचार का कार्य सुन्दर तरीके से कर सकते हैं। इन लोगों के निर्माण के लिये और वृद्ध एवं रुग्ण अवस्था में उनके विश्राम, सेवा व सुरक्षा के लिये कोई स्थान अवश्य हो। तभी वेद प्रचार हो सकता है। इसी भावना के लिए दयानन्द मठ की स्थापना का विचार उमड़ घुमड़ कर उनके मन में आया बस फिर क्या था एक दम आपने उपदेशक विद्यालय लाहौर से आचार्य पद को छोड़कर दीनानगर में शास्त्रार्थ महारथी महाशय जोगोन्द्र पाल की कुटिया 'देव भवन' में मठ की स्थापना कर दी। स्वामी जी की भावना के अनुसार मठ ने कार्य किया है और करता रहेगा।

* दयानन्द संस्कृत महाविद्यालय- 24 अगस्त 1953 ई. को श्रीयुत पण्डित भीम सेन जी वेदालंकार ने इस महाविद्यालय का उद्घाटन किया। इस विद्यालय ने बहुत से वैदिक विद्वान, प्रचारक पुरोहित एवं सन्यासी वैदिक धर्म के प्रचार के लिये दिये हैं। इस विद्यालय में पढ़ने वाले

यज्ञ से किसी दूसरे पदार्थो को अपना समझनें की प्रवृति नष्ट हो जाती है।

www.thearyasamaj.org

ब्रह्मचारियों को निःशुल्क शिक्षा का प्रबंध है, जैसे-पुस्तकें, वस्त्र, आवास, विश्वविद्यालय की फीस, भोजन, आवास इत्यादि सब कुछ निःशुल्क है।

* स्वामी सर्वानन्द गुरुकुल- अप्रैल 2007 में दस ब्रह्मचारियों से आरम्भ किया। इसका आरम्भ पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी (राजस्थान) ने किया। यह गुरुकुल भी संस्कृत विद्यालय की तरह बिल्कुल निःशुल्क है। इमसें मैट्रिक तक पंजाब बोर्ड की पढ़ाई एवं आर्य संस्कृति का ज्ञान कराया जाता है। पंजाब के बच्चे किसी भी गुरुकुल में विद्याध्ययन नहीं करते, इस अभाव को देखकर पंजाब के बच्चे भी गुरुकुल में पढ़कर वैदिक संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

* निःशुल्क औषधालय- अप्रैल 1940 में पण्डित रामचन्द्र (स्वामी सर्वानन्द जी) ने धर्मार्थ औषधालय आरम्भ किया। अपने सहयोगी स्वामी सच्चिदानन्द के साथ वे सुबह आठ बजे से 12 बजे तक सैंकडों रोगियों को निःशुल्क औषधियां वितरण करते थे। असाध्य रोगों का भी निःशुल्क इलाज होता था। आज भी पहले की तरह इस इलाके में मठ के इस औषधालय द्वारा जनता जनार्दन की सेवा की जाती है।

* दयानन्द मठ फार्मेसी- 1950 में स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज ने विशुद्ध आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माणार्थ एवं आयुर्वेद रक्षा हेतु पण्डित बिशन दास (गुरदासपुर) एवं वैद्य सांई दास जी की प्रेरणा से इस फार्मेसी का निर्माण हुआ। इसकी विशुद्धता की धाक सम्पूर्ण आर्यवर्त में फैल रही है। इस फार्मेसी का मुख्य उद्देश्य मठ के द्वारा निःशुल्क चल रहे औषधालय को शुद्ध औषधियां मिल जाए ताकि रोगियों की निःशुल्क सेवा हो सके।

* मठ की गौशाला- 9 जून 1940 में महाशय कृष्ण (आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पदाधिकारी) ने मठ में गौशाला की नींव रखी। सर्व प्रथम वैद्य बिशन दास अमृतसर वालों ने अपनी गाय मठ को दान रूप में दी। उसी गाय की वंशावली से आज मठ में साठ गाय है और मठ के सभी सदस्यों के दूध की पूर्ति इसी गौशाला से हो रही है। मठ में दोनों समय यज्ञ गाय के घी से ही होता है मठ की गौशाला में अच्छी अच्छी नस्लें और दुधारू गायें हैं।

* वेद प्रचारिणी सभा- 1980 में महाशय वीरेन्द्र जी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब) ने मठ में एक वेद प्रचारिणी सभा की स्थापना की। सभा का मुख्य उद्देश्य गांव में वेद प्रचार करना एवं एक समाज से दूसरे समाज में यात्रा के द्वारा प्रचार करना, इस वेद प्रचारिणी सभा के द्वारा आज भी वैदिक विद्वानों एवं भजनोपदेशकों द्वारा सैकड़ों गांवों में वेद प्रचार किया जा रहा है। पंजाब सभा, हरियाणा सभा, दिल्ली सभा, हिमाचल सभा से समय-समय पर इनके सहयोग से वेद प्रचार कार्य किया जाता है।

* मानव सेवा संघ- नर सेवा ही नारायण सेवा है इस भावना को पूरित करने के लिये संत शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने इस संघ की स्थापना की। किसी भी मत मतान्तर का रोगी हो उसकी सेवा, पढ़ने वाले विद्यार्थी चाहे गुरुकुल में हो चाहे कॉलेज का हो उसका सहयोग करना, गरीब लड़कियों के विवाह में सहयोग करना, वैदिक विद्वानों पर किसी प्रकार की आपत्ति आने पर गुप्त रूप से सहयोग करना, अन्य किसी प्रकार की भी सेवा करना इस संघ का मुख्य उद्देश्य है। यह सेवा कार्य पूर्व की भांति आज भी मठ के द्वारा किये जा रहे हैं।

* स्वामी स्वतंत्रतानन्द पुस्तकालय- मठ में प्राचीन वैदिक साहित्य का यह निराला पुस्तकालय है। शोधकर्ता छात्र इसका भरपूर लाभ उठाते हैं। इस पुस्तकालय के निर्माण में चौधरी राम सिंह (हिमाचल प्रदेश) का विशेष सहयोग है। चौधरी राम सिंह ने अपना पुस्तकालय भी मठ को दान रूप में दिया था। स्वामी स्वतंत्रानन्द जी ने एक पुस्तकालय की स्थापना अमृतसर में भी की थी, जो कि आज भी कार्यरत है। जिसमें अलभ्य ग्रंथ और बहुत सी पाण्डुलिपियां विद्यमान हैं।

* वैदिक यति मण्डल- 1984 के अगस्त मास में स्वामी सोमानन्द जी महाराज ने पूज्य गुरुवर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से प्रार्थना की कि महाराज हम साधुओं का भी कोई संगठन होना चाहिए। महाराज ने स्वामी सोमानन्द जी की बात को सहर्ष स्वीकार किया और सब सन्यासियों वानप्रस्थियों और नैष्ठिक ब्रह्मचारियों को पत्र द्वारा बुलाया और मठ में इकट्ठे हो गये। सबने एक स्वर में कहा कि हमारे संगठन का कोई नाम होना चाहिए। स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज ने यति मण्डल नाम दिया। परन्तु स्वामी ओमानन्द जी ने वैदिक यति मण्डल नाम दिया, स्वामी विद्यानन्द जी ने वैदिक यति मण्डल का अनुमोदन किया। सर्व सम्मति से वैदिक यति मण्डल का प्रधान कर्मयोगी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को आजीवन चुना गया तथा मंत्री स्वामी सोमानन्द जी को। संतों के द्वारा यह वैदिक यति मण्डल संस्था का निर्माण हुआ। यह संस्था पूर्व की भांति आज भी देश के कोने-कोने में कार्य कर रही है। इस संस्था का हमारे पूर्व गुरुओं ने यह नियम बनाया था कि इस संस्था का कभी चुनाव नहीं होगा इसके पदाधिकारी को मनोनीत किया जाये ऋषि दयानन्द के सिद्धांतों का प्रचार प्रसार करे, परन्तु आर्य समाज के किसी झगड़े में नहीं पड़ेगे। वैदिक यति मण्डल आर्य सभा के किसी चुनाव में भाग नहीं लेगा, परन्तु व्यक्तिगत भाग ले सकता है।

* भिक्षा वृत्ति- मठ की स्थापना के साथ ही पूज्य स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी महाराज मठ निवासियों के लिये दीनानगर की गलियों में भिक्षा मांगने स्वयं गये और अपने शिष्य बाबा कुन्दनलाल को साथ लेकर गये इस प्रकार भिक्षा वृति की रीत चलाई। आज भी नगर से मठ के ब्रह्मचारी भिक्षा लाते हैं। सुबह और शाम मठ की पाकशाला में भोजन बनता है, दीनानगर की माता व बहनें बड़ी श्रद्धा एवं स्नेह से भोजन देती हैं। यह परम्परा भी प्राचीन काल में ब्रह्मचारी भिक्षा लाकर अपने गुरु आचार्य को दिया करते थे, उसी परम्परा को मठ निभा रहा है।

* कृषि फार्म- मठ में एक छोटा सा कृषि फार्म भी है एक बार मठ के आरम्भ की घटना है, स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी पं. रामचन्द्र, (स्वामी सर्वानन्द जी) स्वामी ईशानन्द इत्यादि दस व्यक्ति मठ में रहते थे। रात के भोजन का समय हुआ, पं. रामचन्द्र जी ने स्वामी जी महाराज को

यज्ञ से प्रलोभन, आत्मश्लाधा के आकर्षण से मनुष्य सर्वथा पृथक हो जाता है।

www.thearyasamaj.org

आकर कहा कि आज मठ के सन्यासियों, ब्रह्मचारियों के खाने के लिये कुछ भी नहीं है। स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी महाराज ने बड़े विश्वास के साथ कहा कि पंण्डित जी घंटी लगाओ घंटी लगा दी गई सब लोग पंक्ति में बैठ गये, पानी परोस दिया गया, तब तक एक सज्जन गोल गांव से चौधरी महात्मा लब्भु राम स्वामी जी महाराज के दर्शनार्थ मठ में आये और स्वामी जी महाराज को भेंट स्वरूप में दो किलो गुड़ दिया, स्वामी जी ने पण्डित जी को कहा, आज भगवान ने आप लोगों के लिये यही प्रसाद भेजा है, इसी को खाकर सांतोष करो और मठ वासियों ने गुड़ खाकर ही रात गुजारी, परन्तु महात्मा लब्भु राम के मन में यह विचार आता रहा कि यदि आज मैं न आता तो आर्य समाज के इतने बड़े संत और यह विद्वान भूखे ही सो जाते और अपने आप को धिक्कारने लगे और संकल्प लिया कि मठ के पास कुछ भूमि होनी चाहिए सुबह अपने घर गये महात्मा लब्भु राम जी सारा सामान गड्डे में लाद कर छःमहीने का राशन मठ में छोड़कर गये। इस प्रकार यह सिलसिला महात्मा लब्भुराम स्वामी सुव्रतानन्द बन कर मठ की भूमि की देख रेख करने के लिये लग गये और मठ की खेती के द्वारा मठ की पाकशाला में अन्न और सब्जियों की आपूर्ति होने लगी। आज भी इलाके के लोग मठ की सब जरूरतों को पूरा करते आ रहे हैं।

कार्यक्रम सूची

दिनांक 18 अक्टूबर 2013 (शुक्रवार आश्विन शुक्ल 15, वि.स. 2070)

ध्यान एवं योग साधना	प्रातः 5.00 से 7.00
संध्या, यज्ञ, भजन एवं प्रवचान	8.00 से 10.00
ध्वजारोहण	10.15 से 10.30
हीरक जयन्ती का उद्घाटन	10.45 से 11.00
वेद सम्मेलन	11.00 से 2.00
संस्कृत एवं संस्कृति सम्मेलन	2.30 से 5.00
संध्या, यज्ञ, भजन एवं प्रवचन	5.30 से 7.30
संगीत संध्या	8.00 से 10.00

19 अक्टूबर 2013 (शनिवार, कार्तिक कृष्ण 1, वि.स. 2070)

ध्यान एवं योग साधना	प्रातः 5.00 से 7.00
संध्या, यज्ञ, भजन एवं प्रवचन	7.30 से 10.00
स्त्री सम्मेलन	10.15 से 12.00
युवा सम्मेलन	12.00 से 2.00
शोभा यात्रा	2.00 से 5.00
संध्या, यज्ञ, भजन एवं प्रवचान	5.30 से 8.00
संगीतमय आर्य सिद्धांत सम्मेलन	8.00 से 10.00

20 अक्टूबर 2013 (रविवार, कार्तिक कृष्ण 2, वि.स. 2070)

ध्यान एवं योग साधना	प्रातः 5.00 से 7.00
यज्ञ की पूर्णाहुति	8.00 से 10.00
आर्य महासम्मेलन	11.00 से 2.00

भवदीय

स्वामी सदानन्द सरस्वती अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर

आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नागौर जिले में वेद प्रचार

नागौर जिले में वेद प्रचार, सत्संग एवं यज्ञ का माह सितम्बर 2013 में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के तत्वावधान में दिनांक 2 सितम्बर 2013 से 25 सितम्बर 2013 तक आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर देश के ख्याति प्राप्त भजनोपदेशक कुँ. भूपेन्द्र सिंह एवं पं. लेखराज शर्मा के साथ विद्वान संत एवं मुनिजन भी वैदिक प्रचार में उपस्थित रहेंगे। अतः आप से निवेदन है कि आप सपरिवार पधार कर, विद्वानों के प्रवचन एवं भजन सुनकर धर्मलाभ लेवें।

कार्यक्रम

भजन एवं प्रवचन प्रतिदिन रात्रि 8.00 बजे से 11.00 बजे तक एवं अगले दिन यज्ञ प्रातः 7.00 बजे से 11.00 बजे तक

* दि. 2 सित. 2013 को आर्य समाज लाडनू
* दि. 3 सित. 2013 को आर्य समाज दूजार
* दिं. 4 सित. 2013 को ग्राम निम्बीजोधाँ
* दिं. 5 सित. 2013 को आर्य समाज डीडवाना
* दि. 6 सित. 2013 को आर्य समाज छोटीखातू/ग्राम किसनपुरा
* दि. 7 सित. 2013 को ग्राम खींवताना
* दि. 8 सित. 2013 को वैदिक आश्रम चौल्यास
* दि. 9 सित. 2013 को आर्य समाज कुचेरा
* दि. 10 सित. 2013 को आर्य समाज नागौर
* दि. 11 सित. 2013 को भोमियाँ जी का मंदिर, रूण
* दि. 12 सित. 2013 को आर्य समाज मेड़ता सिटी
* दि. 13 सित. 2013 को आर्य समाज डांगावास
* दि. 14 सित. 2013 को आर्य समाज डोडियाणा
* दि. 15 सित. 2013 को आर्य समाज इंडवा
* दि. 16 सित. 2013 को ग्राम डेगाना
* दि. 17 सित. 2013 को ग्राम बाजोली
* दि. 18 सित. 2013 को ग्राम टापरवाड़ा
* दि. 19 सित. 2013 को बागड़ा नीडम्, परबतसर
* दि. 20 सित. 2013 को आर्य समाज कुचामन सिटी
* दि. 21 सित. 2013 को आर्य समाज मकराना
* दि. 22 सित. 2013 को ग्राम भंचावा
* दि. 23 सित. 2013 को गणपतराम आंवला की स्कूल बिदियाद
* दि. 24 सित. 2013 को ग्राम बीलू
* दि. 25 सित. 2013 को महेश्वरी भवन बड़ू

-किशनाराम आर्य बिल्लू, प्रधान- आर्य समाज नागौर

गुरुकुल हरिपुर द्वारा प्रचार एवं अन्न-वस्त्र वितरण

गुरुकुल हरिपुर विगत साढ़े तीन वर्षों से विभिन्न प्रकार से भारत के विभिन्न प्रान्तों के ऐसे इलाकों में जहां अब तक सरकार की ओर से बिजली, सड़क और पानी की समुचित व्यवस्था नहीं हो पाई, आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं आर्यसमाजों की ओर से वैदिक धर्म के प्रचार की व्यवस्था नहीं हुई है उन इलाकों में पहुंचकर के प्रचार एवं सहयोग कर रहा है। इसी श्रृंखला में गत 9-10 अगस्त को गुरुकुल हरिपुर के तत्वावधान में तथा जन सहयोग से झारखण्ड प्रान्त के सीमडेगा जिला के कुरडेग विकासखण्ड के लिटीमारा, कसडेगा और गातीडीह को केन्द्र बनाकर विभिन्न 20 के लगभग गांवों के सहस्राधिक लोगों को वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज की मान्यताओं को बताया गया और वैदिक जीवन जीने के लिये उपदेश दिया गया।

तन की पवित्रता से चेतना की पवित्रता नहीं होती किन्तु चेतन की पवित्रता से तन भी पवित्र हो जाता है। जो जल तन को ही पवित्र नहीं कर सकता वह मन व चेतन को कैसे पवित्र करेगा?

www.thearyasamaj.org

उपदेश से प्रभावित होकर कुछ परिवारों ने मांस, मदिरा एवं अन्य मादक द्रव्यों का सेवन न करने का लिखित संकल्प लिया। वितरण के अतंर्गत 600 निर्धन प्रत्येक परिवार को 25-25 किलो चावल जिसका मूल्य 20/- प्रति किलो के दर से 500/- तथा एक साड़ी जिसका मूल्य 200/- है। इस प्रकार एक परिवार को कुल 700/- की सहायता प्रदान करने की व्यवस्था जन सहयोग से की गई थी।

ध्यान रहे यह वह इलाका है जहां राष्ट्रविरोधी तत्व गांव-गांव में पनप रहे हैं तथा ईसाइयो का भी जबरदस्ता बोलबाला है। यह समस्त कार्यक्रम सेवावीर महात्मा वानप्रस्थ श्री सत्यनारायण जी आर्य (कोलकाता) के आशीर्वाद से तथा गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य एवं दिलीप कुमार जिज्ञासु की प्रत्यक्ष देख-रेख में सौहार्दपूर्ण वातावरण में निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

श्रावणी का सदेश तथा चतुर्थ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

आओ हम भी वेद पढ़े-

वेद मानवीय सभ्यता और संस्कृति का मूलाधार है। वेद सम्पूर्ण आर्ष वाङमय का प्राण है। वह भक्तिरस की मंदाकिनी और उच्च गम्भीर विचारों का सुखद आभास है। वेद में ओज-तेज और वर्चस्व की राशि है। वेद मानव के समस्त उच्च गुणों की क्रीडास्थली है।

वेद संसार का गाइडबुक पथ प्रदर्शक है। कम्पनी से बनी किसी भी मशीन का मेनवल बुक उस मशीन के साथ में दिया जाता है ताकि उसका सही प्रयोग कर सकें, वैसे ही इस विराट विश्वरूपी मशीन के सही ज्ञान और प्रयोग हेतु इसके निर्माता, निर्देशक ने वेद को गाइड पुस्तक या मेनवल बुक की तरह सारे मनुष्य जाति के लिये प्रकाशित किया है।

वेद गद्य-पद्य और गेय रचना से युक्त, विविध छंदों से युक्त, विविध शैली से युक्त, विधि-निषेध के बोधक, सर्वज्ञान वाक्यों का समूह, दृष्टादृष्ट विषयों के प्रतिपादक ईश्वरीय वाणी है, जिससे सारे विश्व का तीनों कालों में कल्याण सम्भव है।

भारत की जनसंख्या में हिन्दू ही सबसे अधिक हैं और हिन्दू के लिये वेद स्वतः प्रमाण और अंतिम प्रमाण है। वेदों में हमारे लिए अमूल्य सांस्कृतिक निधि भरी पड़ी है। जिन आर्वाचीन पोथियों को हमने मूर्धन्य बना रखा है, वह तो वेदों के थोड़े से गिने चुने मंत्रों पर न्यौछावर की जा सकती है। भगवत् गीता बड़ी ही उत्तम पुस्तक है, पर वह यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के प्रारम्भ के दो मंत्रों की व्याख्या के सिवाय और क्या है?

वेदाध्ययन हिन्दू मात्र के लिये तो उपयोगी है ही, हिन्दू धर्म में दर्शन, उपासना, सदाचार जो कुछ भी है वह वेद पर अवलम्बित है, परन्तु दूसरे लोगों के लिये भी इसका उपयोग कम नहीं है। मनुष्य की इस प्राचीनतम पुस्तक में सहस्त्रों, लाखों वर्षो से अभ्यस्त जीवन पद्धति भी भरी पड़ी है और ज्ञान की वह ज्योति वेद में जगमगा रही है, जिसकी मानव को सर्वदा आवश्यकता होती है।

यों कहिये कि हिन्दू पण्डित समाज ने वेद के अध्ययन का प्रायः परित्याग कर रखा है, उपनिषदों को छोड़कर ब्राह्मण ग्रंथ प्रायः पढ़े नहीं जाते, रुद्राष्टाध्यायी या ऐसे ही और कुछ अंशों को छोड़कर संहिता भाग प्रायः अछूता रह जाता है, यज्ञ-याग होते नहीं हैं, इसलिये वेदाध्ययन अर्थकर नहीं रह गया, शास्त्रार्थ विषय कम होने से सरस भी नहीं है। पंचमहायज्ञ की प्रथा उठ गई अतः स्वाध्याय की भी परम्परा नहीं है। फलतः वेद जानने वालों की संख्या में निरन्तर ह्रास हो गया है। और जिन लोगों को कर्मकाण्ड के सम्बन्ध में कुछ कण्ठस्थ है भी और जो मंत्रों को स्वर आदि के साथ ठीक-ठीक पढ़ना भी जानते हैं, उनमें भी यथार्थ अर्थ जानने वाले बहुत कम हैं।

वेदों को अर्थ सहित पढ़ने का सर्वाधिक महत्व है, जो मनुष्य वेदों को अर्थ सहित नहीं पढ़ता वह बोझ ढोने वाला स्थाणु (खम्भा) है। संस्कृत भाषा के साथ वेदांग का अध्ययन मंत्रार्थ समझने के लिये आवश्यक है और अध्येता को तर्क शक्ति युक्त, प्रमाण, उदाहरण, कल्पना शक्ति से सक्षम होना चाहिये।

अर्थज्ञान के लिये वेद में विनियुक्त मंत्रों का ऊहापोह पूर्वक विवेचन अवश्य कर लेना चाहिये। वेद के शब्दों का, शब्दों के क्रम का और शब्दों के शुद्ध उच्चारण का बहुत महत्व है। वेद के एक ही शब्द के पूर्णज्ञान और सम्यक् प्रयोग से इहलौकिक और पारलौकिक फलों की पूर्ण प्राप्ति हो जाती है, यही वैदिक ज्ञान का रहस्य है।

वेद पाठ से दो तरह के लाभ होते हैं- 1. ध्वनिजन्य लाभ 2. अर्थजन्य लाभ। वेद पाठ कभी निरर्थक नहीं होता, इसलिये वेद का पढ़ना निष्कारण धर्म है।

वेद पढ़ते समय स्वर, वर्ण और उच्चारण के साथ-साथ मंत्र के छंद, ऋषि और उसकी देवता को भी जानना चाहिये।

वेद पाठ में ऋषि, देवता, छंद, स्वर पर विचार

1. मंत्र का ऋषि कौन? द्रष्टा-ऋषि। ऋषयो मंत्रदृष्टारः, ऋषिर्दर्शनात्। इन प्रमाणों से मंत्र, मंत्र का विषय, छंद, स्वर सहित जिसको स्पष्ट दर्शन होता है और जो उस मंत्र के प्रयोग, विनियोग और फल का संकेत भी करता है वह ऋषि कहलाता है। यस्य वाक्यं स ऋषिः- जिसका वाक्य अर्थात् प्रत्येक मंत्र परमात्मा के द्वारा प्रोक्त होने से परमात्मा सब ऋषियों का ऋषि है, इसलिये प्रत्येक मंत्र में परमात्मा का स्मरण प्रथम ऋषि के रूप में करें, पश्चात् सभी ऋषियों का जो उसके प्रचारक, प्रसारक, प्रतिपादक, चिन्तक, अध्यापक, अध्येता, प्रकाशक, प्रबंधक, संचारक हैं, उनका स्मरण करें।

2. मंत्र का देवता कौन? उस मत्र का विषय ही उस मंत्र का देवता है।

वेदितव्यं दैवतं हि मंत्रे-मंत्रे प्रयत्नतः।
दैवतज्ञो हि मंत्राणां तदर्थमधिगच्छति।।

प्रत्येक मंत्र के देवता अवश्य जानना चाहिये। मंत्रों के देवता को जानने वाला ही उस मंत्र के अर्थ को प्राप्त होता है। या तेन उच्यते सा देवता इस वाक्य से, जिसके बारे में जो कुछ कहा है वह देवता है। देवता अर्थात् मंत्र का चिन्तनीय विषय। (सभी मंत्रों का मुख्य देवता ओ३म् है, ओ३म् के बारे में ही सभी मंत्र कहते हैं।)

3. छंद- यदक्षरं परिमाणं तत् छंदः अर्थात् जो अक्षरों का परिमाण, अक्षरों का गणित या अक्षरों की गणना छंद है। दादयति आच्छादयति तत् छंः। छंद सात प्रकार के विशेष हैं। गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्, जगती।। गायत्री के 24 अक्षर होते हैं, इसमें चार-चार अक्षर बढ़ाते जाने से क्रमशः अन्य छंद प्राप्त होते हैं।

4. स्वर- स्वर सात प्रकार के हैं, जो मंत्रों के मधुर, गम्भीर प्रभावकारी गान के लिये प्रयुक्त होते हैं, जो चित्त की एकाग्रता और अर्थदर्शन एवं अभिव्यक्ति की उत्कृष्ट अभिलाषा से स्वतः स्फुरित होते हैं। सात छंदों के मुख्य सात स्वर होते हैं।

षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद।

सभी ग्रंथों में वेद प्रधान है, वेद में किया गया श्रम व्यर्थ नहीं जाता। एकहि साधे सब सधे। सब साधे सब जाये।। इस न्याय से वेद को साध लेने से सब कुछ सध जायेगा। जब वेद में सब ग्रंथों का समावेश होता ही है तो अन्यत्र व्यर्थ श्रम क्यों किया जाय?

डॉ. सुदर्शन देव आचार्य, गुरुकुल हरिपुर उडिसा

www.thearyasamaj.org

यजुर्वेद का पुरुष सूक्त (पुरुषाध्याय)- एक अध्ययन

डॉ. भवानीलाल भारतीय

वेदों को दिव्य काव्य की संज्ञा दी गई है। जिस प्रकार लौकिक काव्य में यथा स्थान रस, अलंकार, वक्रोक्ति, औचित्य आदि तत्वों का समावेश रहता है, उसी प्रकार वेदों में भी काव्यों में प्रयुक्त होने वाले ये सभी तत्त्व यथा व्यवस्था पाये जाते हैं। अलंकारों में रूप व अलंकार को प्रधान माना गया है। किसी व्यक्ति या वस्तु को अन्य के सदृश रूप गुण सम्पन्न मानकर उसका तथैव वर्णन करना ही पुरुष के रूप में करता है और इस प्रकार परमात्मा के साथ-साथ समाज रूपी पुरुष के विविध अंगों एवं उपांगों का वर्णन करता है। निश्चय ही परमात्मा की पुरुष (मानव) के रूप में कल्पना करना काव्य व्यापार ही है तथापि बुद्धिगम्य होने से इसका औचित्य समझ में आता है।

इस पुरुष सूक्त का देवता स्वयं पुरुष (परमात्मा) ही है और मंत्रदृष्टा ऋषि नारायण हैं। अनुष्टुप छंदों वाला यह 22 मंत्रों का सूक्त न्यूनाधिक परिवर्तनों के साथ अवशिष्ट तीन संहिताओं में भी पाया जाता है। परमात्मा की दिव्य पुरुष के रूप में कल्पना वेदेतर ग्रंथों में भी मिलती है। गीता का उदाहरण देना ही पर्याप्त है। गीता के ग्यारहवें अध्याय में विराट रूप दर्शन इसी श्रेणी का है जिसमें अनेक बहुदरवक्त्रनेत्रं, अनन्तरूपम् तथा अनादि और अनन्त परमात्मा को विश्वेश्वर तथा विश्वरूप कहा गया है। गीता में उक्त बंहुवक्त्रनेत्रं बहुबाहूरूपादम् बहुदरं आदि विराट पुरुष के विशेषणों और विशिष्टताओं की तुलना यजुर्वेदोक्त पुरुष के सहषशीर्षा, सहस्राक्ष तथा सहस्त्रपात् आदि से भली भांति की जा सकती है। दयानन्द सरस्वती ने वेदोक्त सहस्त्र को असंख्यात का वाचक बताया है और कहा है कि जीवों के असंख्य सिर, आंखें और पैर आदि अंग प्रत्यंग जिस विराट पुरुष के भीतर समाये हैं, उसे यदि सहस्त्र सिरों वाला, सहस्त्र आंखों वाला और सहस्त्र पांवों वाला कहना उपयुक्त ही है। यदि कोई पूर्वाग्रही इन विशेषणों को स्थूल अर्थ में ले तो क्या यह समझा जाये कि जिस पुरुष के हजार सिर हैं, उसके आंखें भी और पांव भी हजार ही है। कायदे से तो हजार सिर वाले के दो हजार नेत्र तथा दो हजार पैर होने चाहिए। निश्चय ही उपमाएं एकांगी होती हैं।

यहां प्रयुक्त 'पुरुष' शब्द भी विचारणीय है। शास्त्रों में पुरुष का प्रयोग अनेकशः हुआ है। कहीं यह परमात्मा वाचक है तो अन्यत्र यह जीवात्मा का भी वाचक है। सांख्य दर्शन में 'पुरुष' चेतन सत्ता का वाचक है। यह चेतन सत्ता जीवात्मा तथा परमात्मा दोनों के लिए भिन्न समान वाचक है। गीता में जीव की विवेचना के पश्चात् उत्तमः पुरुषस्तु अन्यः कहकर जीवों से भिन्न सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी ईश्वर 'परमात्मा' नाम से सम्बोधित किया गया है। यजुर्वेद का यह पुरुष निश्चय ही परमात्मा का वाचक है जो विविध रूपा सृष्टि का निर्माण, पालन तथा यथा समय संहार करता है। 'पुरुष' की व्युत्पत्ति दो प्रकार से करते है। प्रथम यह शरीर ही पुरी है तथा इसमें निवास करने वाला जीव पुरुष है। दूसरा अर्थ यह है कि समस्त ब्रह्माण्ड भी एक पुरी है और इसके कण कण में समाया परमात्मा भी पुरुष पद वाच्य है। पुरुषाध्याय में इसी सर्वव्यापक पुरुष और उसके द्वारा रचित सृष्टि की चर्चा है। यह सर्वत्र और सर्वव्यापक होने से इस भूमि (यहां समस्त सृष्टि प्रपत्र का वाचक) के भीतर तो समाया है ही, परन्तु उसे इस ब्रह्माण्ड तक ही महदूद (सीमित) समझना हमारी भूल होगी। यह परमात्मा तो इस दृष्टि में आने वाले ब्रह्माण्ड से भी पृथक है। भौतिक संसार से पुरुष की यह दूरी दस अंगुल की है जिसका अभिप्राय इतना ही है कि दस अंगुलियों के तुल्य भूत प्रकृति तथा उससे उत्पन्न विकारों एवं महाभूतादि से वह पृथक है, निर्लिप्त है।

वस्तुतः इस स्थूल सृष्टि में जो कुछ था, जो है तथा जो आगे होगा, वह इस परमपुरुष की सत्ता के कारण है। वही परमात्मा मोक्ष रूपी अमृत का स्वामी है और वही जीवों को मोक्ष देता है। हमें यह भ्रम हो सकता है कि यदि पुरुष और ब्रह्माण्ड तुल्य ही हैं तो ब्रह्म की सत्ता भी सीमित ब्रह्माण्ड की सीमा की भांति सीमित होगी। इसके निराकरण में अगला मंत्र कहता है कि दृष्टि में आने वाली सृष्टि तो मात्र इसे उत्पन्न करने वाले की महिमा का एक अंश मात्र है। यदि इस परमात्मा के चार अंशों की कल्पना करें तो सारी सृष्टि उसके एक पांव में ही समाई है जब कि अवशिष्ट तीन अंश तो उसके अमृत स्वरूप के ही हैं। अतः ब्रह्माण्ड और उसके निर्माता को तुल्य समझना हमारी भूल होगी। इस आरम्भिक चर्चा के पश्चात् इस सूक्त में पुरुष परमात्मा द्वारा सृष्टि रचना के विभिन्न आयाम दर्शाये गये हैं। प्रकृति रूपी उपादान से रचित यह सृष्टि विविध रूपों वाली है। इसमें यदि जड़ पदार्थ हैं तो चेतन प्राणी भी हैं। इन प्राणियों में जहां बुद्धि और विचारों का धनी मनुष्य है वहां जलचर, थलचर तथा नभचर, असंख्य प्रकार के असंख्य की पतंग, पशु पक्षी आदि हैं। अगले मंत्रों में संकेत रूप में बताया गया है कि विविध पशुओं तथा अन्य प्राणियों की शरीररचना करने वाला, उनमें चेतन जीवात्मा का प्रवेश कराने वाला यह परम पुरुष परमात्मा ही है। पुरुष सूक्त में 'यज्ञ' को परमात्मा का पर्याय नाम माना है। अतः छठे मंत्र में कहा गया है कि उस सर्वपूज्य, सर्वोपरि यज्ञ नाम वाले ईश्वर ने विविध प्रकार के पशु उत्पन्न किए। मंत्र में इन्हें वायव्य, आरण्य तथा ग्राम्य कहा गया है। गाय, भैंस, बकरी आदि ग्राम्य पशु हैं तो शेर, चीते बाघ, भालू आदि आरण्यक (जंगलों में रहने वाले) पशु है। वायव्य पशु नभचर हैं जो वायु वेग में निर्बाध गति से उड़ते रहते हैं। अश्व, गाय, बकरा, बकरी, भेड़ आदि गाम्य पशु वर्ग का उत्पन्नकर्ता भी परमात्मा ही है। निश्चय सम्पूर्ण जैविक सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता वही है।

यह भी ध्यान रहे कि मानव समाज में जो वर्ण व्यवस्था है वह भी एक प्रकार से परमात्मा द्वारा निर्मित ही है। इसका भाव इतना ही है कि मानव समाज को सुसंगठित तथा कार्यश्रम बनाने के लिए मनुष्यों के कार्यों, व्यवसायों तथा रूचि भेद के आधार चार प्रकार विभाजन की व्यवस्था भी परमात्मा की ही बनाई है। तब प्रश्न होता है कि इस समाज रूपी मानव समूह का विभाजन किस आधार पर हुआ? यदि समाज को एक पुरुष (मनुष्य) की संज्ञा दे तो उसके मुख, बाहु, उदर तथा पैर कौन होंगे? उत्तर में पुरुष सूक्त ने मानव समाज के विविध अंगों के कर्म और व्यवसायों के विधायक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्णों का उल्लेख कर दिया और कहा कि समाज का मुख (मुखिया) कहलाने वाला ब्राह्मण ही उसका मुख है, भुजायें रक्षक होने से क्षत्रिय हैं, पोषक होने से वैश्य ही उदर है और पांव के सदृश शूद्र हैं जो इस शरीर के संचालन के मुख्य आधार हैं। ध्यान रहे कि जन्म के समय तो हर शिशु शूद्र ही होता है क्योंकि अभी उसे तीन वर्णों में से किसी एक वर्ग का अधिकार या कर्तव्य नहीं मिला है।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राज्यन्यः कृतः।
उरूतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत। ३७/११

यजुर्वेद के इसी मंत्र के आधार पर कालान्तर में यह कल्पना की गई कि ब्रह्मा (विराट् पुरुष) के मुख से ब्राह्मण का जन्म हुआ, क्षत्रिय का

यज्ञ से सतत पुरुषार्थ करने के पश्चात ही फल प्राप्त होता है। उससे मनुष्य संतुष्ट रहता है।

www.thearyasamaj.org

जन्म उसके हाथों से हुआ, वैश्य का उदर से और बेचारा शूद्र तो उसके पांवों से ही पैदा हुआ। शरीर के अन्त्य भाग (पैर) से पैदा होने के कारण शूद्रों को 'अन्त्यज' कहा गया। इस मंत्र के स्वामी दयानन्द कृत अर्थ यथार्थ हैं जहां इन वर्णों को समाज रूपी मानव के विविध अंग कहा गया है।

पूर्णोपमा की भांति पूर्ण रूपक की सार्थकता भी इसी में है कि उपमेय के सभी अंग उपांगों को उपमान के अंगादि के तुल्य या उनसे सम्बद्ध बताया जाये। पूर्ण पुरुष परमात्मा के इस दिव्य शरीर के विभिन्न अंगों से सृष्टि के अन्य पदार्थों की उत्पत्ति आलोच्य सूक्त के 12वें तथा 13वें मंत्र में उल्लिखित है- यहां चन्द्रमा को पुरुष के मन से उत्पन्न कहा जबकि सूर्य की उत्पत्ति उसके नेत्रों से बताई गई। वायु को कानों का उत्पत्ति स्थल बताया जबकि मुख से अग्नि की उत्पत्ति बताई। नाभि के रूप में अन्तरिक्ष की कल्पना की गई तो आकाश (द्यूलोक) को उसका मूर्धा स्थानीय (सिर) बताया गया। यह भूमि परम पुरुष के पांव हैं तो दिशाएं को क्त्रोत्र (कान) तुल्य हैं। वस्तुतः सृष्टि की रचना तथा संचालन यज्ञ पुरुष द्वारा किया एक बृहत याज्ञिक अनुष्ठान ही है। देवलोक इस यज्ञ का विस्तार परमात्मा की सहायता एवं मार्गदर्शन से ही करते हैं। इस सृष्टि रूपी महायज्ञ में बसंत ऋतु यदि धृत के तुल्य है तो ग्रीष्मकाल इसमें होमी जाने वाली समिधा के समान हैं तथा शरद् ऋतु होम किये जाने वाला हुत द्रव्य (द्रवि) है। वस्तुतः इस स्थूल यज्ञ के द्वारा याज्ञिक लोग यज्ञ नाम वाले परमात्मा का ही यजन-पूजन करते हैं-यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा और इसी रचनात्मक, निर्माणात्मक, परोपकार रूपी यज्ञ से देवों-विद्वानों को लोक में महिमा प्राप्त होती है। इन यज्ञकर्ताओं को अपने पूज्य कर्मों के फलस्वरूप वह गति प्राप्त होती है जिसे पूर्वकालीन साधनाशील विद्वानों ने प्राप्त किया था।

अध्याय के अवशिष्ट मंत्रों में परमात्मा के सम्बन्ध में कुछ अन्य उदात्त विचार मिलते हैं। सोलहवां मंत्र परमात्मा के साक्षात्कार करने वाले उस साधक भक्त का आत्मकथन है जो स्पष्ट घोषणा करता है कि उसने ज्ञानस्वरूप आदित्य तुल्य प्रकाशमान तथा अंधकार-तमस से सर्वथा पृथक् उस परमपिता को जान लिया है। उसे जानकर ही मनुष्य मृत्यु के दुःख सागर से पार होता है। उसका ज्ञान प्राप्त किये बिना जीवन मरण के बंधन से मुक्त होने का और कोई उपाय नहीं है। उन्नीसवें मंत्र में पुरुष-परमात्मा को प्रजापति कहकर सम्बोधित किया गया। यद्यपि यह प्रजापति अजन्मा है तथापि स्वयं को उस सृष्टि के रूप में प्रकट कर रहा है। अभिप्राय इतना ही है कि सृष्टि रचना में जो परमात्मा का कौशल दिखाई देता है वह परमात्मा की सर्वत्र उपस्थिति को दर्शाता है। किन्तु इस रहस्य का जानकार कौन है? उत्तर में मंत्र का कहना है- तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरा : धैर्यवान लोग, जो निरन्तर परमात्मा की उपासना में लगे रह कर इस सृष्टि रचना के पीछे रचयिता के कौशल को देखते, समझते हैं वे ही उसका इस प्रकार परोक्ष दर्शन करने में समर्थ होते हैं। कारण कि ये समस्त लोक लोकान्तर उस सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक परमात्मा में ही स्थित हैं, उसकी सत्ता ने ही उन्हें निर्मित किया है। अंतिम मंत्र में श्री और लक्ष्मी की चर्चा है। इन्हें पत्नी अर्थात् पालनकत्री बताया गया है। निश्चय ही सांसारिक वैभव, ऐश्वर्य तथा अन्य शक्तियां परमात्मा द्वारा दी गई हैं।

उपर्युक्त सूक्त की व्याख्या ऋषि दयानन्द ने यजुर्वेद भाष्य के अतिरिक्त ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के सृष्टिविधा प्रकरण में भी है। विस्तार के लिए पं. जयदेव शर्मा विद्यालंकार कृत भाषा भाष्य भी द्रष्टव्य है।

- 3/5, शंकर कॉलोनी, श्रीगंगानगर

समाज सुधार के पक्षधरों एक हो जाओ
डॉ. नरेन्द्र दामोलकर का बलिदान अवश्य रंग लायेगा

समाज सेवी डॉ. नरेन्द्र दामोलकर मूल रूप से महाराष्ट्र के निवासी थे। उन्होंने पिछले 10 वर्ष से अंधविश्वास, कालाजादू व जादूटोना के खिलाफ पूणे के आस-पास मुहिम चला रखी थी। उनकी मांग थी कि सरकार कालाजादू एवं अंधविश्वास विरोधी विधेयक पास करे। वे इसके लिए वातावरण तैयार कर रह थे। गांव गांव जाकर लोगों को जाग्रत करना-विधायकों से मिलना। ऐसी घटनाओं को पत्र व पत्रिकाओं में छपवाना यह काम वे निरन्तर करते रहे थे। कुछ सिरफिरे व स्वार्थी तत्वों ने गोली मार कर उनकी हत्या कर दी। वे षड़यंत्र के शिकार हो गये। इसके पीछे निश्चित ही उन लोगों का हाथ हो सकता है जो पाखंड व अंधविश्वास से ही अपनी रोटी कमाने का काम करते है। आसाराम बापू के आश्रम में सन् 2008 में दो बालको की मृत्यु का कारण यही कालाजादू बताया जाता है।

आसाराम बापू के आश्रम में तांत्रिक क्रियाएँ होती रही हैं ऐसा सुखराम तांत्रिक ने 2008 में आरोप लगाया एवं आश्रम के सदस्य राजू चांडक ने दावा किया कि यहाँ तात्रिक क्रियाएँ होती है एवं महिलाओं के साथ आपत्तिजनक स्थिति में देखा गया, इसी कारण आसाराम ने राजू चांडक पर हमला करवाया व उसकी हत्या करवाने का प्रयास किया। आसाराम के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज हुई।

आज देश में आशा राम जैसे हजारों लोग पांखड फैला कर भोली जनता का शोषण कर रहे है।

अभी पिछले हफ्ते एक नाबालिक बालिका के भूत उतारने के नाम (इलाज) पर बलात्कार का शिकार हुई। लडकी के कलमबद्ध बयान में आसाराम बापू का ही नाम आ रहा है यह जोधपुर की घटना है। ऐसे पाखण्डी ढोंगी लोग अपना नाम व पैसा कमाने के चक्कर में धर्म भीरू समाज की कमजोर नब्ज पकड़ कर अपना उल्लू सीधा करते है। गांव-गांव में भूत प्रेत उतारने के अड्डे चलते है न तो सरकार इनका विरोध करती है ना ही जनता ये तो एक दो व्यक्ति दामोलकर जैसे लोग हिम्मत करके सामने आते है।

अफसोस है की डॉ. नरेन्द्र दामोलकर इन पाखण्डियों के शिकार हो गये। आज आवश्यकता है सामूहिक रूप से अंधविश्वास के खिलाफ मुहिम छेड़ने की। आर्य समाज इस कार्य में अग्रिम भूमिका निभा सकता है। ऋषि दयानन्द ने पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी उनके सतत् प्रयास से देश में जाग्रति आई थी। लेकिन अभी बहुत काम करना बाकी है। डॉ. दामोलकर की हत्या के तुरंत एक दिन बाद महाराष्ट्र सरकार ने अंधविश्वास और कालाजादू विधेयक पास कर दिया। हम सबको मिलकर अन्य प्रांतों की सरकारों पर दबाव डालना चाहिए ताकि पूरे देश में पाखण्ड के खिलाफ कानून बनाया जा सके और ऐसे लोगों को सजा दिलाई जा सके। डॉ. नरेद्र दामोलकर को आर्य जगत का शत् शत् नमन्। उनके विचारों को आगे बढ़ाना ही उनको सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

- अमर मुनि, संपादक

यज्ञ मनुष्य में त्याग की भावना उत्पन्न करता है। क्योंकि स्वाहा शब्द कह रहा है– स्व का त्याग।

www.thearyasamaj.org

दौसा जिले में आर्य समाज बाँदीकुई के प्रतिनिधित्व में वेद प्रचार सप्ताह हर्षोल्लास से सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्देशानुसार आर्य समाज के तीसरे नियमान्तर्गत वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है। इस मुख्य धारा से जुड़े रहकर आर्य समाज बांदीकुई ने प्रतिवर्ष श्रावणी पर्व से लेकर जन्माष्टमी तक पुर्णउत्साह के साथ ग्राम-ग्राम व वैदिक परिवारों में यज्ञ करता आ रहा है। किन्तु इस वर्ष आर्य कन्या पाठशाला बांदीकुई के प्रधानाचार्य श्री धर्मसिंह आर्य के कुशल प्रयासों से विभिन्न विद्यालयों में बहुत प्रभावी ढंग से कार्यक्रम आयोजित हुआ व सब विद्यालयों में आगामी प्रतिवर्ष कार्यक्रम करते रहने की इच्छा प्रकट की। रक्षा बंधन से जन्माष्टमी तक कार्यक्रम निम्न प्रकार रहा।

1. दिनांक 20.8.2013 को वेद प्रचार समाह का शुभारम्भ आर्य समाज मंदिर बांदीकुई में समारोह पूर्वक किया गया।
2. दिनांक 21.8.2013 को ओम हंस विद्या विहार बडियाल खुर्द बांदीकुई में वैदिक यज्ञ व वेदोपदेश की विचारधारा प्रवाहित की गई।
3. दिनांक 22.8.2013 को जय हिन्द पब्लिक स्कूल भाण्डेडा में प्राकृतिक सुरम्य वातावरण में यज्ञ व वेदोपदेश का कार्यक्रम हुआ।
4. दिनांक 23.8.2013 को आभानेरी इंटरनेशनल स्कूल आभानेरी में सैकड़ो लोगो व विद्यार्थियों को वैदिक संस्कारों व विचारों से प्रेरित किया गया।
5. दिनांक 24.8.2013 को आर्य समाज के सभासद श्री महावीर विजय के निवास स्थल पर यज्ञ व वैदिक विचाराधारा का प्रवाह हुआ।
6. दिनांक 25.8.2013 को मंत्री आर्य समाज बांदीकुई श्री महाराज सिंह आर्य के निवास स्थल पर पारिवारिक जनों की अच्छी उपस्थिति में कार्य सम्पन्न हुआ।
7. दिनांक 26.8.2013 को राजकीय संस्कृत विद्यालय रायपुरा अगावली के प्रांगण में वेद सरिता का प्रवाह हुआ जिसकी विद्यालय प्रधानाचार्य ने खूब प्रशंसा की साथ ही स्थानीय निवासी श्री रामकिशोर सैनी के यहां भोजन प्रसादी का कार्यक्रम हुआ।
8. दिनांक 27.8.2013 को दयाल विद्यापीठ तहसील सिकराय जिला दौसा के प्रधानाचार्य श्री रामदयाल गुर्जर ने पूर्ण सुव्यवस्था के साथ यज्ञ व वेदोपदेश का कार्य सम्पन्न करवाया। यहां के कार्यक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के महामंत्री श्री अमर मुनि जी की उपस्थिति ने कार्यक्रम में चार चांद लगा दिये। लोगों का उत्साह देखने योग्य था। श्री अमर मुनि जी के उपदेश से प्रभावित होकर स्थानीय लोगों ने आर्य समाज टोरडा की स्थापना की इच्छा प्रकट की। उसे स्वीकार करते हुए आर्य समाज टोरडा के सफल संचालन के लिए पांच व्यक्तियों की समिति नियुक्त की गई। जिन्हें निर्देशित किया गया कि कोई सुयोग्य स्थान नियुक्त कर कार्य संचालन किया जावे जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान व आर्य समाज बांदीकुई का पूरा सहयोग रहेगा साथ ही बुलाने पर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के वरिष्ठ सभासद व भजनोपदेशक आदि भेज दिये जायेंगे जिससे आर्य समाज का जनहितकारी कार्य सर्वत्र प्रस्तुत किया जा सके।

उपर्युक्त सम्पूर्ण कार्यक्रम को सुव्यवस्थित ढंग से परिपूर्ण करने का विशेष योगदान परमआदरणीय आर्य शिरोमणि आचार्य विनोदीलाल जी दीक्षित को दिया जाता है उनके द्वारा वैदिक ज्ञान का प्रचार प्रसार व आर्य समाज बांदीकुई का सहयोग प्रशसंनीय रहा साथ ही इस कार्यक्रम को सफलता पूर्वक संचालित करने में श्री धर्मसिंह आर्य प्रधानाचार्य, आर्य समाज बांदीकुई के कार्यवाहक प्रधान श्री पूरण सिंह माल मंत्री श्री महाराज सिंह आर्य सभासद महावीर विजय श्री रामदयाल गुर्जर, मुकेश गुर्जर, मुकेश आभानेरी, लाखन सिंह राजपूत, दयाराम शर्मा, रतनलाल सैनी, बाबूलाल छोकरवाडा, विजय सैनी आदि का सहयोग प्रशंसनीय रहा।

-महाराज सिंह आर्य, मंत्री

ग्राम टोरडा तहसील सिकराय जिला दौसा में आर्य समाज की स्थापना

दिनांक 27.8.2013 को आर्य समाज बांदीकुई द्वारा आयोजित वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंत्री श्री अमरमुनि जी व आचार्य विनोदीलाल दीक्षित की उपस्थिति में आर्य समाज टोरडा तहसील सिकराय जिला दौसा की स्थापना की गई। प्रारम्भिक कार्य संचालन के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंत्री अमर मुनि जी ने पांच सदस्यीय समिति का गठन किया जिसमें श्री बाबूलाल शर्मा, श्री रामदयाल गुर्जर, श्री रतीराम झीझण, श्री राधामोहन शर्मा, श्री नाहर सिंह को मनोनीत किया। जो आर्य समाज टोरडा की गतिविधि व साप्ताहिक सत्संग आदि का संचालन करेंगे। इस अवसर पर आर्य समाज बांदीकुई के कार्यवाहक प्रधान पूरन सिंह माल मंत्री श्री महाराज सिंह आर्य प्रधानाचार्य श्री धर्मसिंह आर्य, श्री बाबूलाल छोकरवाडा विजय सैनी सहित ग्रामीण उपस्थित थे।

-महाराज सिंह

आर्य समाज अरावली विहार (कालाकुआँ), अलवर में नौ दिवसीय श्रावणी पर्व व वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी आर्य समाज अरावली विहार, अलवर में नौ दिवसीय श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार कार्यक्रम 20 अगस्त से प्रारम्भ होकर 28 अगस्त 2013 को सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम प्रतिदिन सायं 4.30 बजे से 6.30 बजे तक आयोजित किया गया। प्रतिदिन 4.30 बजे से 5.:0 बजे तक पं. अमरमुनि जी- महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान एवं मार्तण्ड पत्रिका के मुख्य संपादक के आचार्यत्व में यज्ञ एवं उपदेश हुए। यज्ञ पर काफी बड़ी संख्या में यजमान जोड़ें बैठे। नौ दिवसीय कार्यक्रम में अलवर की समस्त आर्य समाजों के सदस्यों एवं अन्य धर्मप्रेमियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। समय-समय पर कार्यक्रम में जिला प्रधान श्री जगदीश प्रसाद आर्य जखराणा, पं. शिव कुमार कौशिक एवं पुरोहित रघुवीर आर्य ने यज्ञ में भाग लिया एवं प्रवचन किये। पं. अमरमुनि ने वेद मंत्रों की सुंदर व्याख्या करते हुए प्रवचनों में श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन श्रावणी पर्व होने का अर्थ एवं इसका ऋषि-मुनियों द्वारा बताया गया महत्व बताया। आपने इस काल में वेदों तथा उपनिषदों के स्वाध्याय करने पर बल दिया एवं ज्ञान से परिपूर्ण तथा धर्माचार्य को ही वास्तविक गुरु बताया। आपने अपने प्रवचनों में निर्लिप्त भाव से ईश्वर भक्ति एवं कर्म करने का आह्वान किया एवं आत्मा परमात्मा का अंश नहीं है। हम सब ईश्वर कि संतान है। सत्यार्थ प्रकाश को वैदिक संस्कृति की आधार शिला मजबूत करने के लिये महर्षि दयानन्द द्वारा लिखा गया ग्रंथ बताया। आपने ब्रह्म के पांच गुणों द्वारा पहचान बताई - हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे, भूतस्यजातः पतिरेक आसीत, सदाधार। श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर आपने प्रवचन में कहा कि महर्षि दयानन्द ने योगीराज कृष्ण को 'आप्त पुरुष बताया' श्री अशोक मित्तल ने संक्षिप्त व्याख्यान, में कहा कि 'करोड़ों-अरबों' की सम्पत्ति अर्जित करने वाले धर्मग्रंथ न होकर 'कथा वाचक हैं।' आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग के मंत्री श्री बृजेन्द्र देव आर्य ने उपदेश में 'श्रावणी पर्व' में अच्छे ग्रंथो का स्वाध्यां करने पर जोर दिया। आर्य समाज के जिला प्रधान एवं प्रान्तीय उप-प्रधान श्री जगदीश प्रसाद आर्य जखराणा ने प्रवचन में बताया कि 'महर्षि चरक द्वारा बनाया गया आयुर्वेद' वे की उत्पत्ति है। 'स्वर्गस्य जीवन किम्?' के प्रश्न के उत्तर में महर्षि दयानन्द ने 'नारी' को बताया। आपने कहा कि 'विचारों का आधार ज्ञान है एवं जीवात्मा के छः लक्षण हैं- इच्छा, द्वेष, सुख-दुःख, प्रयत्न तथा अल्पता।' श्रीमती दिविशा आर्य ने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि 'दैनिक यज्ञ से मन, विचार तथा पर्यावरण की शुद्धि होती है। पं. शिव कुमार कौशिक ने प्रवचन में कहा कि ईश्वर यज्ञमय है' एवं हमें अपने जीवन को यज्ञमय बनाना चाहिए। डॉ. बी.डी. चौधरी मंत्री आर्य समाज बजाजा बाजार ने यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डाला। माता मोहनदेवी ने वैदिक संस्कृति जीवित रखने के लिये स्वाध्याय, यज्ञ करने पर जोर दिया। श्रीकृष्णालाल अदलखा ने सभी आंगतुकों को धन्यवाद दिया एवं कार्यक्रम का संचालन श्री धर्मवीर आर्य ने किया।

-धर्मवीर आर्य, मंत्री

यज्ञ के द्वारा मनुष्य अपनी उन्नति अर्थात् ऊँचा उठता है। प्रज्ज्वलित अग्नि की ज्वालाओं को ऊँचा उठता देखकर मनुष्य के हृदय में उन्नति की प्रेरणा प्राप्त होती है तथा उसकी प्रसुप्त भावनाऐं जागृत हो जाती है।

www.thearyasamaj.org

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-51 / 2011 - 2013 / आर. एन. आई नं. 10471/60

आर्य समाज, केसरपुरा रोड, शिवगंज

परमपिता की असीम अनुकम्पा से हर वर्ष की भांति वेद प्रचार कार्यक्रम पर यज्ञ एवं भजन प्रवचन का आयोजन रखा गया है। यज्ञ ब्रह्मा: विद्यादेव जी गुरुकुल टंकारा, भजनीक: वेगराज जी गाजियाबाद पधारेंगे। अत: आप सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधारकर कार्यक्रम को सफल करें। कार्यक्रम:-

2 सितम्बर से 8 सितम्बर 2013 तक

यज्ञ, भजन व उपदेश ..... प्रात: 8.30 से 11.00 बजे तक
भजन, यज्ञ व उपदेश ..... सायं 5.00 से 7.00 बजे तक
यज्ञ स्थल- अमर मंदिर, दादावाडी स्कूल के सामने, बडगांव रोड़, शिवगंज- 307027 (राज.)

- बसन्त कुमार गेहलोत, मंत्री

आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर

द्वारा

पूर्व छात्रा स्नेह मिलन समारोह

कार्यक्रम

22 सितम्बर 2013, रविवार

स्थान *वैदिक विद्या मन्दिर, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर*

प्रात: 10.00 बजे- हवन
प्रात: 10.30 बजे- पुष्पों से स्वागत, अभिनन्दन एवं स्नेह मिलन
प्रात: 11.00 बजे- अतिथियों का स्वागत, उद्बोधन एवं पूर्व छात्राओं द्वारा अनुभव एवं स्मृतियाँ
दोप. 1.00 बजे- स्नेहभोज

पूर्व छात्राऐं सादर आमंत्रित हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का प्रान्तीय सम्मेलन

'महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास' और आर्य समाज जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 27,28,29,30 सितम्बर 2013, शुक्रवार, शनिवार, रविवार और सोमवार को श्री विजयसिंह जी भाटी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की अध्यक्षता में एक प्रान्तीय स्तर पर एक आर्य सम्मेलन किया जा रहा है। इस सम्मेलन में आर्य जगत् के उच्च कोटि के विद्वान् तपस्वी, साधु, संन्यासी एवं ऋषि भक्त पधार रहे हैं। सम्मेलन में आर्य समाज की वर्तमान स्थिति का अवलोकन करते हुए व्याप्त समस्याओं के सटीक समाधान प्रस्तुत किए जाएंगे तथा उन्हें संगठन के और व्यक्तिगत स्तर पर जीवन में धारण करने के लिए कार्य योजना पर काम किया जाएगा। समस्त ऋषि भक्त, सिद्धांत निष्ठ आर्यों से प्रार्थना है कि आप सम्मेलन में पधार कर आर्य समाज को जीवन देने वाले अभियान में सहयोगी बनें।

-विजय सिंह भाटी, अध्यक्ष

बाल (लघु) सत्यार्थ प्रकाश

वह संतान बड़ी भाग्यशाली है जिसके माता-पिता धार्मिक विद्वान् हों। अत: माता-पिता का सुयोग्य होना आवश्यक है। जो माता-पिता और आचार्य शिष्य की उचित शिक्षा व ताड़ना करते हैं वे मानो अपनी संतान एवं शिष्य को अपने हाथों अमृत पिला रहे हैं। इसके विपरीत जो लाड़ करते हैं वे विष पिलाकर उनका जीवन नष्ट कर रहे हैं। - महर्षि दयानन्द सरस्वती

काश! सभी भारतीयों को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ होता तो आज स्वतंत्र भारत के प्रशासक व नागरिक चरित्रवान होते और जघन्य पाप न होते। प्रत्येक का जीवन सुखी व सुरक्षित होता। सभी आर्यजनों से अनुरोध है कि अपनी संतानों हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित एवं टंकाराश्री अरुणा सतीजा द्वारा लिखित बाल (लघु) सत्यार्थ प्रकाश आज ही मंगवाएं। और अपनी संतानों को संस्कारवान बनाएं। मूल्य मात्र 10/- रूपये। वितरण करने हेतु न्यूनतम 100 प्रति खरीदने पर 20 प्रतिशत की विशेष छूट। प्राप्ति हेतु आज ही संपर्क करें- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली मो. 9540040339

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित। सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक :
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर - 302004

प्रेषित

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। उनसे संम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।